उपनिवेशित और उपनिवेशक के बीच एक जटिल मुठभेड़

पुनर्वसु जोशी

तेरहवें *प्रतिमान* में छपा 'अंग्रेज़ी और हम' विमर्श विचारोत्तेजक है, लेकिन यह भी कहना चाहूँगा कि इस विमर्श के कुछ वक्ताओं के तर्कों से थोड़ी असहमति है।

उदाहरण के लिए प्रबाल दासगुप्ता के कथन का अंतिम पैरा देखा जा सकता है जिसमें वे अल्जीरियायी लेखक कमेल दाऊद के अंग्रेज़ी में अनूदित उपन्यास *मेरसो इन्वेस्टिगेशन* का ज़िक्र करते हैं। (अंग्रेज़ी की वर्तनी में लिखे शब्द म्यूरसॉल्ट का उच्चारण सही उच्चारण 'मेरसो' है)। प्रबाल दासगुप्ता का कथन है : 'हाल ही में मैंने एक अल्जीरियायी लेखक कमेल दाऊद का फ्रांसीसी में लिखा गया बेहतरीन उपन्यास पढ़ा जिसके अंग्रेज़ी अनुवाद का शीर्षक था *म्यूरसॉल्ट इन्वेस्टिगेशन*। इसमें एक अनाम को एक बाहरी व्यक्ति क़त्ल कर डालता है। 2015 में ऐसा उपन्यास लिखा जाना, और पुरस्कृत होना इस बात का सबूत है कि ग्लोबल स्तर पर अंग्रेज़ी के रुतबे के बावजूद और एंग्लो-अमेरिकी संस्कृति के दायरे के बाहर अल्जीरिया और फ्रांस के बीच बिना अंग्रेज़ी की मध्यस्थता के सीधे संवाद हो सकता है।'

दासगुप्ता के तर्क को पढ़ कर ऐसा प्रतीत हुआ कि वे कदाचित, अल्जीरिया के इतिहास और कमेल दाऊद के इस उपन्यास की पृष्ठभूमि से परिचित नहीं हैं। अत: यह आवश्यक है कि अल्जीरिया के इतिहास और कमेल दाऊद के उपन्यास की पृष्ठभूमि संक्षेप में प्रस्तुत कर दूँ।

पहले अल्जीरिया के बारे में। अल्जीरिया 1830 से 1962 तक फ्रांस का उपनिवेश रहा है और फ्रांसीसी भाषा को अल्जीरिया में वही 'सम्मान और पद' प्राप्त है जो कि भारत में अंग्रेज़ी को दिया जाता है। अल्जीरिया में आज भी शासन-प्रशासन की भाषा फ्रेंच है।

इस जानकारी के प्रकाश में यह तर्क किंचित अटपटा लगता है, क्योंकि अल्जीरिया और फ्रांस के मध्य फ्रेंच में सीधा संवाद तो 130 साल से चल रहा है! ऐसा नहीं है कि इन दो देशों के बीच में संवाद अब तक अंग्रेज़ी में चल रहा था और कमेल दाउद के उपन्यास ने यह सिद्ध कर दिया कि बिना अंग्रेज़ी के भी संवाद हो सकता है— जैसा कि दासगुप्ता के कथन से प्रतीत होता है। अल्जीरिया और फ्रांस के बीच 130 वर्षों से फ्रेंच में चल रहा संवाद एक उपनिवेश और साम्राज्यवादी देश के बीच चल रहा संवाद है। अत: कमेल दाऊद के उपन्यास का लिखा जाना और फ्रांस में पुरस्कार पाना अपवाद नहीं है। बल्कि, यह तो एक प्रकार से, फ्रांस और उसके उपनिवेश रहे अल्जीरिया के मध्य 130 सालों से चल रहे संवाद की निरंतरता की समकालीन कड़ी है।

दासगुप्ता का तर्क अत्यंत क्षीण इसलिए भी है, क्योंकि फ्रांसीसी उपनिवेशों में फ्रेंच का वर्चस्व रहा है, स्पेन के उपनिवेशों में स्पेनिश का वर्चस्व रहा है, और ब्रितानी उपनिवेशों में अंग्रेज़ी का वर्चस्व रहा है। कहने का तात्पर्य यह कि इन विभिन्न भाषाओं के उपनिवेश, अपने पर राज करने वाले युरोपीय

दाऊद के लिए कमू के उपन्यास के नायक मेरसो द्वारा जिस अनाम अरब की हत्या की गयी, उस अनाम अरब को नाम देने की प्रक्रिया, उपन्यास की एक क्षुद्र घटना का पुनरावलोकन भर नहीं है, बल्कि यह स्थापित करना है कि मध्य-युग से ही श्वेत उपनिवेशिकों ने अफ़्रीका और एशिया के ... प्राकृतिक संसाधनों के नामकरण का अभ्यास तो किया, लेकिन इरादतन उन व्यक्तियों और मानव समूहों के नामों को प्रत्यक्ष रूप से और उनके अस्तित्व को परोक्ष रूप से, सप्रयास नकारा ...

देश की भाषा से मुक्त नहीं हो पाए। ये युरोपीय देश और उनके उपनिवेश अपने आप में भाषा के मामले में 'सेल्फ़-कंटेंड सिस्टम' हैं।

जब फ़्रांस और अल्जीरिया को 130 वर्षों में उस उपनिवेश-साम्राज्यवाद के संवाद में अंग्रेज़ी की आवश्यकता नहीं पड़ी, तो आज भला क्यों कर पड़ेगी? वे 130 वर्षों से अंग्रेज़ी और एंग्लो-अमेरिकी संस्कृति के दायरे से बाहर थे और आज भी हैं। अतः हम फ़्रांस और अल्जीरिया के मध्य, फ्रेंच में हो रहे संवाद को अंग्रेज़ी भाषा के पराभव के रूप में प्रस्तुत नहीं कर सकते, क्योंकि वह संवाद भी एक उपनिवेश और औपनिवेशिक शक्ति का, औपनिवेशिक भाषा में हुआ संवाद है। ठीक उसी तरह, जिस तरह अंग्रेज़ी हमारे और ब्रिटेन के अन्य उपनिवेशों के लिए भूमिका निभाती है।

अब उपन्यास के बारे में। दरअसल, पत्रकार कमेल दाऊद का अपने पहले उपन्यास के ज़रिये साहित्य में पदार्पण मूलतः अल्बेर कमू से एक जटिल और साहित्यिक मुठभेड़ है। साथ-ही-साथ, यह परोक्ष रूप से वि-उपनिवेशीकरण के बारे में एक गहन रचनात्मक वक्तव्य भी है।

अल्बेर कमू के उपन्यास *द स्ट्रेंजर* का नायक, मेरसो एक व्यक्ति की हत्या कर देता है जिसका उपन्यास में नाम नहीं है और मृत व्यक्ति को कमू 'एक अरब' कह कर छोड़ देते हैं। कमेल दाऊद, अपने उपन्यास में अल्बेर कमू के उस अनाम, मृत अरब व्यक्ति को नाम देते हैं : मूसा। और यह उपन्यास *मेरसो इन्वेस्टिगेशन* कमू के उपन्यास के उस अरब व्यक्ति की हत्या के प्रकरण की मूसा के भाई हारून के दृष्टिकोण से पुनर्प्रस्तुति है।

दाऊद के लिए कमू के उपन्यास के नायक, मेरसो, द्वारा जिस अनाम अरब की हत्या की गयी, उस अनाम अरब को नाम देने की प्रक्रिया, उपन्यास की एक क्षुद्र घटना का पुनरावलोकन भर नहीं है, बल्कि यह स्थापित करना है कि मध्य-युग से ही श्वेत उपनिवेशिकों ने अफ़्रीका और एशिया के पर्वतों, नदियों, जीव-जंतुओं और अन्य प्राकृतिक संसाधनों के नामकरण का अभ्यास तो किया, लेकिन इरादतन उन व्यक्तियों और मानव समूहों के नामों को प्रत्यक्ष रूप से और उनके अस्तित्व को परोक्ष रूप से, सप्रयास नकारा जो उन पहाड़ों, नदियों और अफ़्रीका और एशिया के देशों के मूल निवासी थे। यह एक उपनिवेश रहे देश के रचनाकार का अपने देश के शासित लोगों की अस्मिता पर पुनः दावा करना है।

मेरी श्रीश चौधरी द्वारा दी गयी जानकारी से भी थोड़ी असहमति है। लीग ऑफ़ नेशन मूलतः ब्रितानी और अमेरिकी अवधारणा थी और उसके गठन से संबंधित सारे विमर्श अंग्रेज़ी में ही हुए थे। उसका 'कवनेंट' (चार्टर नहीं) भी मूलतः अंग्रेज़ी में लिखा गया था और वह फ्रेंच में अनूदित हुआ था। (संदर्भ : *द ओरिजिन*, स्ट्रक्चर *ऐंड वर्किंग ऑफ़ द लीग ऑफ़ नेशन*, पृष्ठ 89।) ठीक उसी प्रकार संयुक्त राष्ट्र में मात्र अंग्रेज़ी का दबदबा नहीं है बल्कि वहाँ का सारा शासकीय कार्य छह आधिकारिक भाषाओं में समान रूप से होता है।

भाषा को लेकर शेष विमर्श विचार का एक वितान निर्मित करता है।

— इंदौर (मप्र)

सर्वहारा रातें

उन्नीसवीं सदी के फ्रांस में मज़दूर-स्वप्न

ज़ाक रॉंसिएर

अनुवाद
अभय कुमार दुबे

सर्वहारा रातें
ज़ाक रॉंसिएर
अनुवाद
अभय कुमार दुबे